بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

Office of The sadar Majlis Ansarullah Bharat

دفتر صدر مجلس انصار اللہ بھارت

Ph. +91-01872-220186, Fax, +91-01872-224186, Mob, +91-9815494687, E-Mail: ansarullahbharat@gmail.com

सारांश खुत्बः जुम्अः सैय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफ़तुल मसीहिल अलख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ दिनांक **16.02.17** मस्जिद बैतुल फ़तूह लंदन।

आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सदैव सोते समय आयतुल कुर्सी, सूरः इख़लास, सूरः फ़लक़ तथा सूरः अन्नास तीन बार पढ़कर हाथों पर फूंकते थे और फिर अपने हाथों को शरीर पर फेरते।

जिन परिस्थितयों में से हम गुज़र रहे हैं दुआओं और नमाज़ों तथा ज़िक्र की ओर विशेष ध्यान देना चाहिए अपितु जमाअत के प्रति उपद्रवों, फ़सादों तथा द्वेष रखने वालों और शत्रुओं के षड्यन्त्रों से बचने के लिए भी एक बड़ा महत्त्व पूर्ण कर्त्तव्य समझकर ध्यान देना चाहिए।

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के पश्चात हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया-

एक मोमिन को जो यह दावा करता है कि मैं ख़ुदा तआला पर ईमान रखता हूँ, अल्लाह तआला के इस आदेश को सदैव सम्मुख रखना चाहिए कि अल्लाह तआला ने हमें इबादत के लिए पैदा किया है। जैसा कि अल्लाह तआला फ़रमाता है- وَمَا خَلَقْتُ الْجِنَّ وَالْإِنسَ إِلَّا لِيَعْبُدُونِ अर्थात- जिन व इन्स को इबादत के लिए पैदा किया है। फिर अल्लाह तआला ने हमें उपासना की रीतियाँ भी बताईं जिनमें क्रियात्मक अंश भी है, अर्थात प्रत्यक्ष क्रियाएँ तथा दुआओं के शब्द भी हैं जिसे ज़िक्र भी कह सकते हैं। नमाज़ में ये दोनों बातें विद्यमान हैं अर्थात प्रत्यक्ष क्रियाएँ भी हैं और स्तुति भी है, दुआएँ भी हैं। किन्तु नमाज़ों के अतिरिक्त भी ज़िक्र तथा दुआएँ और ख़ुदा तआला को याद रखना एक मोमिन का काम है। क़ुर्आन-ए-करीम में ही अल्लाह तआला ने अनेक दुआएँ विभिन्न नबियों के माध्यम से बताई हैं जो हम नमाज़ में भी पढ़ सकते हैं तथा चलते फिरते ज़िक्र के रूप में भी पढ़ते हैं। लोग अपने पत्रों में लिखते हैं कि हमें अमुक कठिनाई है, अमुक कष्ट है कोई दुआ और ज़िक्र बताएँ जिसको हम बार बार दोहराते रहा करें तथा हमारे कष्ट और दुविधाएँ दूर हों। सामान्यत्या लागों को मैं यही लिखता हूँ कि नमाज़ों की ओर ध्यान दें, सजदों में दुआएँ करें, नमाज़ में दुआएँ करें तथा अपने ख़ुदा तआला से सहायता मांगें परन्तु आज मैं एक ज़िक्र के बारे में भी बताना चाहता हूँ जो आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सुन्नत भी है और ख़ुदा तआला की ओर से उतरी हुई दुआएँ भी हैं जिनके अर्थों पर विचार करके पढ़ने से जहाँ इंसान अल्लाह तआला की तौहीद का आभास कर लेता है वहाँ अल्लाह तआला की सुरक्षा और शरण में भी आता है तथा हर प्रकार के कष्टों से भी सुरक्षित रहता है। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम न केवल यह कि स्वयं यथावत रूप से प्रति दिन रात को सोने से पहले इन आयतों तथा दुआओं को पढ़ा करते थे अपितु सहाबा को भी पढ़ने की प्रेरणा देते थे तथा अनेक स्थानों पर इन दुआओं के महत्त्व एवं लाभ आपने बयान फ़रमाए हैं।

रिवायत में आता है कि आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सदैव सोते समय आयतुल कुर्सी, सूरः इख़लास, सूरः फ़लक़ तथा सूरः अन्नास तीन बार पढ़कर हाथों पर फूंकते थे और फिर अपने हाथों को शरीर पर इस प्रकार फेरते कि सिर से आरम्भ करके जहाँ तक शरीर पर हाथ जा सकता, फेरते। अतएव जिस काम को आपने यथावत् रूप से जारी रखा अथवा यथावत रूप से किया, यह आपकी सुन्नत बनी तथा इस काम को प्रत्येक मुसलमान को करना चाहिए और हम अहमदी जिनको इस युग में आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की प्रत्येक सुन्नत पर अमल करने की ओर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने मार्ग दर्शन किया है, हमें उसके अनुसार करने के विशेष प्रयास करने चाहिएँ तथा विशेष रूप से इन परिस्थितयों में जिनमें से हम गुज़र रहे हैं दुआओं और नमाज़ों तथा ज़िक्र की ओर विशेष रूप से, न केवल अपनी व्यक्तिगत आध्यात्मिक तथा सांसारिक आवश्यकताओं के लिए ध्यान देना चाहिए बलकि जमाअती फ़ितनों और फ़सादों और द्वेष रखने

वालों तथा दुश्मनों के षड्यंत्र से बचने के लिए भी एक अत्यधिक महत्त्व पूर्ण कर्त्तव्य समझकर ध्यान देना चाहिए। इस ज़िक्र तथा आयतों का महत्त्व कुछ अन्य हदीसों के द्वारा भी ज्ञात होता है जो मैं आपके सामने रखता हूँ। आयतुल कुर्सी के विषय में दो जुम्अः पहले मैं बयान कर चुका हूँ। आज क़ुर्आन-ए-करीम की अन्तिम तीन सूरतों के विषय में हदीसों के माध्यम से बात करुंगा।

हज़रत आयशा रज़ी. बयान फ़रमाती हैं कि हर रात नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब बिस्तर पर लेटते तो अपनी हथेलियों को जोड़ते तथा उनमें قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ النَّاسِ तथा قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ व قُلْ هُوَ اللَّهُ أَحَدٌ पढ़कर फूंकते, फिर जहाँ तक सम्भव होता दोनों हाथों को शरीर पर फेरते, आप तीन बार ऐसा करते।

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इसकी व्यवस्था इतने यथावत रूप से फ़रमाते थे कि हज़रत आयशा रज़ीयल्लाहु अन्हा आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की अन्तिम बीमारी में स्वयं ये दुआएँ पढ़तीं और आपके हाथों पर फूंक कर आपके ही हाथ आपके शरीर पर फेरतीं। यह विचार हज़रत आयशा को आना निःसन्देह इस कारण से था कि आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इस क्रिया में बड़े यथावत थे तथा इसकी बरकत का महत्त्व हज़रत आयशा पर भली भांति स्पष्ट किया हुआ था।

फिर सहाबा को इन सूरतों की बरकतें तथा महत्त्व का किस प्रकार आभास दिलाया, इस बारे में हज़रत उक़बा बिन आमिर बयान करते हैं कि मेरी रसूल-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से भेंट हुई, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने आगे बढ़ कर मेरा हाथ पकड़ लिया और फ़रमाया- ऐ उक़बा बिन आमिर! क्या मैं तुम्हें तौरात और इंजील और ज़बूर और फ़ुर्कान-ए-अज़ीम में जो सूरतें उतारी गईं हैं उनमें से तीन अति उत्तम सूरतों के विषय में न बताऊँ? मैंने निवेदन किया कि क्यूँ नहीं, अल्लाह मुझे आप पर फ़िदा करे, फिर आपने मुझे قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ النَّاسِ तथा قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ व قُلْ هُوَ اللَّهُ أَحَدٌ पढ़कर सुनाईं। फिर फ़रमाया- ऐ उक़बा! तुम इन्हें मत भूलना और कोई रात ऐसी मत गुज़ारना जब तू इन्हें न पढ़ ले। उक़बा कहते हैं कि जब से आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यह फ़रमाया कि तू इन्हें न भूलना तो उस समय से मैं इन्हें नहीं भूला तथा मैंने कोई रात ऐसी नहीं गुज़ारी जब मैंने इन्हें पढ़ न लिया हो।

फिर सूरः इख़लास के महत्त्व के विषय में हज़रत सईद ख़ुदरी रज़ी. रिवायत करते हैं कि एक व्यक्ति ने एक आदमी को **क़ुल हुवल्लाहु अहद** पढ़ते हुए सुना जो इसको बार बार पढ़ रहा था। जब सुबह हुई तो उसने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सेवा में उपस्थित होकर सारी बात बयान की तथा जैसे कि वह उस व्यक्ति को कम या छोटा समझ रहा था इस लिए शिकायत के रंग में बयान किया। इस पर रसूल-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया- क़सम है उस ज़ात की जिसके हाथ में मेरी जान है, यह क़ुर्आन के तीसरे भाग के बराबर है। हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ी. बयान करते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने सहाबा से फ़रमाया कि क्या तुम में से कोई इस बात में विवश है कि एक रात में एक तिहाई क़ुर्आन मजीद पढ़े। यह बात सहाबा को बड़ी जटिल अनुभव हुई। उन्होंने कहा, या रसूलुल्लाह! हम में कौन इसका सामर्थ्य रखता है कि एक तिहाई क़ुर्आन-ए-करीम रात में पढ़ ले। आपने फ़रमाया कि **अल्लाहु वाहिदुस्समद,** अर्थात सूरः इख़लास एक तिहाई क़ुर्आन है।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इसको तीसरा भाग क्यूँ कहा? इस लिए कि अल्लाह तआला ने क़ुर्आन-ए-करीम को तौहीद (एकेश्वरवाद) को प्रमाणित करने तथा इसको स्थापित करने के लिए अवतरित फ़रमाया। अतएव इस सूरः में बड़े स्पष्ट एवं व्यापक शब्दों में तौहीद को बयान किया गया है। इस लिए इसके शब्दों पर विचार करने तथा इनके अनुसार कर्म करने से इंसान वास्तविक तौहीद पर अमल कर सकता है। इंसान को केवल इतना ही नहीं समझ लेना चाहिए कि मैंने सूरः इख़लास पढ़ ली तो तीन भाग क़ुर्आन-ए-करीम का पढ़ लिया। इसका अर्थ यह है कि तुम लोग इसको पढ़ो तथा फिर तौहीद पर क़ायम हो तथा इसके अनुसार कर्म करो।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- क़ुर्आन-ए-करीम क्या है? क़ुर्आन-ए-करीम की शिक्षा तौहीद के क़याम के लिए ही है जिसके लिए प्रत्येक इंसान को प्रयास भी करना चाहिए और दुआ भी करनी चाहिए। फिर हज़रत आयशा रज़ीयल्लाहु अन्हा से एक रिवायत है, आप बयान करती हैं कि रसूल-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक व्यक्ति को एक सिरये (ऐसा सामूहिक अभियान जिसकी अगुवाई के लिए किसी अन्य को भेजा जाता था) का अमीर बनाकर भेजा जो अपने साथियों को नमाज़ पढ़ाता था तथा क़ुर्आन के अन्त में **क़ुल हुवल्लाहु अहद** पढ़ता था। जब सहाबा वापस आए तो उन्होंने इस बात की चर्चा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से की, तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया- उससे पूछो कि वह

क्यूँ ऐसा करता है। सहाबा ने जब उससे पूछा तो उसने कहा- इस लिए कि यह रहमान ख़ुदा की विशेषता है, इस कारण से मैं इसको पढ़ना पसन्द करता हूँ। इस पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि तुम लोग उसे सूचना दे दो कि अल्लाह तआला भी उससे प्रेम रखता है।

फिर हज़रत अबी बिन कअब बयान करते हैं कि जब मुशरिकों ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पूछा कि अपने रब्ब का परिवार परिचय हमें बताएँ, इस पर अल्लाह तआला ने قُلْ هُوَ اللّٰهُ أَحَدٌ۔ اَللّٰهُ الصَّمَدُ अवतरित फ़रमाई। अतः समद वह है जो न किसी का बाप है, न उसका कोई बाप है। क्यूँकि कोई भी वस्तु ऐसी नहीं जो पैदा हुई हो किन्तु मरना अवश्य है तथा कोई भी चीज़ ऐसी नहीं जिसने मरना है और अवश्य ही उसका कोई न कोई उत्तराधिकारी होगा। जब अल्लाह अज़्ज़ो जल न तो वफ़ात पाएगा न ही उसका कोई उत्तराधिकारी होगा وَلَمْ يَكُنْ لَّهُ كُفُوًا أَحَدٌ कि उसके समान कोई नहीं तथा न ही कोई उसके जैसा तथा न ही कोई उसके बराबर है।

हज़रत अबू हुरैरा बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि लोग आपस में एक दूसरे से पूछते हैं कि प्रत्येक वस्तु को अल्लाह तआला ने पैदा किया तो अल्लाह तआला को किसने पैदा किया? आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया- अतः जब तुम ऐसे लोगों को देखो तो قُلْ هُوَ اللّٰهُ أَحَدٌ कहो, यहाँ तक तुम यह सूरः समाप्त कर लो, अर्थात सूरः इख़लास पूरी पढ़ो। इसके अर्थों पर विचार करो तो तुम्हें पता लग जाएगा कि अल्लाह तआला को पैदा करने वाली कोई चीज़ नहीं, वह अनन्त काल से है और अन्त काल तक रहेगा, सदैव से है तथा सदैव रहेगा। फ़रमाया कि फिर उसको चाहिए कि वह शैतान से बचने के लिए शरण मांगे तो वह उसको कोई हानि नहीं पहुंचा सकेगा।

फिर हज़रत सुहेल बिन सअद से रिवायत है एक आदमी नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आया तथा अपनी निर्धनता की शिकायत की। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जब तू अपने घर में प्रवेश करे तो यदि कोई घर में उपस्थित हो तो अस्सलाम अलैकुम कहा करो तथा यदि कोई न हो तो अपने ऊपर ही सलामती भेजा करो और एक बार **क़ुल हुवल्लाहु अहद** पढ़ा करो, तो उस व्यक्ति ने ऐसा ही किया यहाँ तक कि अल्लाह तआला ने उसको इतनी सम्पत्ति प्रदान कर दी कि उसके पड़ौसी भी उसके द्वारा लाभान्वित होने लगे। अतः जब इंसान तौहीद का पाठ सीख ले तथा उसके अनुसार कर्म करे तथा समस्त शक्तियों एवं सामर्थ्यों का स्वामी ख़ुदा तआला को समझे तो अल्लाह तआला फिर अत्यधिक प्रदान करता है। अल्लाह तआला फ़रमाता है कि वह मुत्तक़ी को ऐसे ऐसे माध्यमों के द्वारा सम्पत्ति प्रदान करता है जहाँ से वह सोच भी नहीं सकता।

हज़रत जाबिर से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जिसने प्रतिदिन पचास बार قُلْ هُوَ اللّٰهُ أَحَدٌ पढ़ी उसे क़यामत के दिन उसकी क़ब्र से पुकारा जाएगा कि खड़ा हो जा तथा जन्नत में दाख़िल हो जा। इब्ने देलमी से रिवायत है जो नजाशी की बहिन के बेटे थे और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सेवा भी करते रहे थे कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जिसने नमाज़ में अथवा इसके अतिरिक्त सौ बार قُلْ هُوَ اللّٰهُ أَحَدٌ पढ़ा, अल्लाह तआला ने उसके लिए आग से मुक्ति अनिवार्य कर दी।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- अतएव यह महत्ता है सूरः इख़लास की, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम समद का अर्थ बयान करते हुए फ़रमाते हैं- समद का अर्थ कि उसके अतिरिक्त समस्त वस्तुएँ पैदा हो सकती हैं तथा नष्ट हो सकती हैं किन्तु अल्लाह तआला का अस्तित्व ही ऐसा है जो समद है। लोग समझते हैं कि समद का अर्थ बेनियाज़ (स्वच्छंद, आत्मनिर्भर) है बेनियाज़ी उसकी यह है कि न वह नश्वर है, न समाप्त होने वाला है तथा न उसके जैसी वस्तु कोई पैदा हो सकती है।

फिर हदीसों में तीनों क़ुल पढ़ने के बारे में हज़रत उक़बा बिन आमिर जुहनी बयान करते हैं कि आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया- किसी व्यक्ति ने इन जैसी सूरतों या कलाम के साथ अल्लाह तआला की शरण प्राप्त नहीं की, अर्थात यह ऐसा कलाम तथा ऐसी दुआ है कि जिसके द्वारा इंसान अल्लाह तआला की शरण में आ जाता है और कभी नष्ट नहीं होता और समस्त कष्टों से बचता है। अल्लाह तआला की शरण का इससे अच्छा मार्ग कोई नहीं है। हज़रत अबू सईद से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जिनों तथा इंसानों की नज़र से पनाह मांगा करते थे। जब मुअव्वज़ातैन (सूरः फ़लक़+ सूरः अन्नास) नाज़िल हुईं तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इनको ग्रहण कर लिया।

हज़रत इब्ने आबिस से रिवायत है कि एक बार रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मुझसे फ़रमाया कि ऐ इब्ने आबिस! क्या मैं तुझे शरण मांगने के सर्वश्रेष्ट वाक्य के विषय न बताऊँ। मैंने निवेदन किया, या रसूलुल्लाह! क्यूँ नहीं। आपने .

फरमाया कि वे सूरतें हैं, सूरः अलफ़लक़ तथा सूरः अन्नास। फिर अन्तिम दो सूरतों का महत्त्व बयान करते हुए एक सहाबी कहते हैं कि हम लोग एक बार रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ किसी यात्रा पर थे। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पीछे से मेरे निकट आए तथा मेरे कन्धों पर हाथ रखकर फ़रमाया कि أَعُوذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ पढ़ो, मैंने यह कलिमा पढ़ लिया, इसी प्रकार नबी करीम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यह सूरः पूरी पढ़ी तथा मैंने भी आप रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ इसे पढ़ लिया। फिर इसी प्रकार أَعُوذُ بِرَبِّ النَّاسِ पढ़ने के लिए फ़रमाया तथा पूरी सूरः पढ़ी जिसे मैंने भी पढ़ लिया। फिर आपने फ़रमाया- जब नमाज़ पढ़ा करो तो ये दोनों सूरतें नमाज़ में पढ़ लिया करो।

उक़बा बिन आमिर जुहनी से रिवायत है कि मैं एक यात्रा में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ था। जब फज्र का समय हुआ तो आप रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अज़ान कही तथा अक़ामत कही, फिर मुझे अपने दाहिनी ओर खड़ा किया फिर आपने मुअव्वज़तैन के साथ तिलावत की। जब आप नमाज़ पढ़ चुके तो फ़रमाया- तू ने कैसा देखा। मैंने निवेदन किया कि सत्य मैंने देख लिया या रसूलुल्लाह। तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया- तू ये दोनों सूरतें पढ़ा कर जब भी तू सोए और जब भी उठे।

अतएव यह महत्त्व है इन सूरतों का तथा इस ज़माने में इनके पढ़ने की महत्ता और भी अधिक हो गई है। हमारी रूहानी प्रगति तथा शैतान के आक्रमण से बचने के लिए तथा जमाअत के रूप में इस्लाम के विरुद्ध जो षड्यन्त्र हो रहे हैं, उनसे बचने के लिए। आजकल एक ओर इस्लाम के विरुद्ध, इस्लाम विरोधी शक्तियों के बड़ी चालाकी से प्रयास जारी हैं तो दूसरी ओर तथाकथित मुलसमान उलमा तथा मुसलमान लीडरों ने एक इस प्रकार की स्थिति उत्पन्न कर दी है जहाँ फ़ितना और फ़साद पैदा हो चुका है। मुस्लिम आलिम मसीह मौऊद अलै. के विरुद्ध भी मुस्लिम जनता को भड़काकर शैतानी शक्तियों को अवसर दे रहे हैं कि उनके हाथ दृढ़ हों। इसी प्रकार नासतिकता है तो वह भी आजकल अपनी चरम सीमा पर है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि तुम जो मसीह मौऊद के शत्रुओं का निशाना बनोगे, यूँ दुआ मांगा करो कि मैं प्राणियों के शर से, जो भीतरी तथा बाहरी शत्रु हैं, ख़ुदा की पनाह मांगता हूँ जो सवेरे का स्वामी है अर्थात प्रकाश को प्रकट करना उसके अधिकार में है। यह प्रकाश आध्यात्मिक प्रकाश है जो मसीह मौऊद के आने से प्रकट हुआ। तथा मैं अंधेरी रात के शर से जो मसीह मौऊद के इंकार के फ़ितनों की रात है, ख़ुदा की पनाह मांगता हूँ।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- इनमें एक तो इस्लाम के दुश्मन लोग हैं जो इस्लामी शिक्षा पर आपत्ति करते हैं तथा दूसरे इस्लाम के आलिम हैं जो अपनी ग़लतियों को छोड़ना नहीं चाहते तथा मसीह मौऊद के विरुद्ध लोगों को भड़काने में व्यस्त हैं, जिनमें पाकिस्तान के आलिम सबसे ऊपर हैं। अतः ऐसी परिस्थितयों में पाकिस्तान में अहमदियों को विशेष रूप से इस सुन्नत को जारी रखने की आवश्यकता है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि सूरः फ़लक़ में जो شَرِّ غَاسِقٍ إِذَا وَقَبَ कहा गया है उसमें अन्धेरी रात के शर के फ़ितने से बचने की दुआ है। ग़ासिक़ कहते हैं रात को तथा वक़ब का अर्थ है कि अन्धेरे तथा अंधकार का छा जाना और यह अन्धेरी रात का फ़ितना मसीह मौऊद के इंकार के फ़ितने अंधी रात है जिससे शरण मांगी गई है।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- खेद है मुसलमानों की अवस्था पर कि अल्लाह तआला ने उन्हें एक दुआ सिखाई किन्तु मुसलमानों ने उसकी परवाह नहीं की। मुसलमान तो उन फ़ितनों में डूब रहे हैं अधिकांशतः तथा इसी कारण से आज दुनिया में ग़ैर मुस्लिमों को मुसलमानों पर आपत्ति करने का अवसर मिल रहा है। अतएव मुसलमानों की यह अवस्था हमें ध्यान दिलाती है कि इन सूरतों को ध्यान पूर्वक पढ़ें ताकि हम इन अन्धेरों से बच सकें।

फिर सूरः अन्नास में अल्लाह तआला के पालनहार, स्वामी तथा वास्तविक उपास्य होने का बयान है। यह बयान करके उसकी शरण में आने तथा शैतान की शंकाओं से बचने की दुआ की है। आजकल नासतिकता तथा संसारिकता का भी बड़ा ज़ोर है तथा दुनियादारी ने अपने पंजे इतने अधिक इस समाज में सामान्यत्या गाड़ दिए हैं कि कुछ युवा उससे प्रभावित हो जाते हैं। अतः ये दुआएँ जब हम अपने ऊपर फूंकें तो साथ ही अपने बच्चों पर भी फूंकें ताकि हर प्रकार की दुर्घटनाओं से हमारी पीढ़ियाँ भी सुरक्षित रहें तथा दीन पर स्थापित रहने वाली तथा ख़ुदा तआला की वहदानियत (एकत्व, अद्वैतवाद) को समझने वाली हों। अल्लाह तआला करे कि हममें से प्रत्येक इन सूरतों के भावार्थ को समझते हुए आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि की सुन्नत के अनुसार अमल करने वाला हो। ख़ुदा तआला की वहदानियत का विषय हम पर स्पष्ट हो, उसके अतिरिक्त किसी अन्य के समक्ष हम झुकने वाले न हों, उसी को सारी शक्तियों का स्रोत समझें, न केवल दिल में बल्कि प्रत्येक कार्य से उसे प्रमाणित करें कि अल्लाह तआला ही सारी शक्तियों का स्रोत है, प्रत्येक प्रकाश का साधन है तथा प्रत्येक कृपा का देने वाला है।